Artistic Narration Vol. XV No. 1 Jan.-June 2024 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247
Impact Factor 8.898 (SJIF)

सुधीर पटवर्धन की कला में शहरीय जीवन की खोज

पवन यादव
शोधार्थी
ड्राइंग एंड पेंटिंग विभाग
एस०एस०जे० विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा
ईमेलः *pawanyadav30@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:

पवन यादव

सुधीर पटवर्धन की कला में शहरीय जीवन की खोज

Artistic Narration 2024, Vol. XV, No. 1, Article No. 22 pp. 123-131

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-2024-vol-xv-no1-233

सारांश

इस शोध पत्र में, मेरे द्वारा शहरीय जीवन के अंधकारमय पथ के उन धाराओं पर कार्य करने के लिए एक विशिष्ट प्रयास किया गया है, जो भारत के प्रसिद्ध कलाकारों में से एक, सुधीर पटवर्धन द्वारा सहानुभूतिपूर्वक शहरीय जीवन को चित्रित किया गया हैं, जो एक रेडियोलोजिस्ट होने के अलावा, एक उत्कृष्ट कलाकार की गहरी और विश्लेषणात्मक दृष्टि रखते है। जिन्होंने शहरीय जीवन व्यतीत करने वाले आम मजदूरों, कारखाने के श्रमिकों, रेलवे स्टेशन, रेस्ट्रोन, स्ट्रीट और थिएटर आदि का उपयोग किये। जो असंतुलन हमारे समाज में पैदा हुआ है, उन्ही दैनिक जीवन को बनाए रखने के लिए मध्यवर्गीय शहरीय लोग अधिक मेहनत करते हैं। संपूर्ण समकालीन भारतीय कला परिदृश्य के कलाकारो में प्रमुख्य कलाकार सुधीर पटवर्धन ने इस तरह के संवेदनशील तरीके से शोषण, भुखमरी, कठिनाई और उदासी के विषय पर विचार किये है। इन्होंने शहरीय जीवन में होने वाली समस्याओ की सही पहचान की और उनके द्वारा चित्रित प्रत्येक चित्र में अपने सौम्य हृदय और आत्मा के बारे में विस्तार से बताया है। यह शोध पत्र से दृश्य कला की गुणात्मक विश्लेषण और शहरीय जीवन व्यतीत करने वाले मध्यवर्गी लोगो की समस्यायो एवं विकास पर केंद्रित है। जिसका मुख्य कार्य मजदूरों, कारखाने के श्रमिकों, शहर के बदलते दृश्य आदि के समस्याये जो समाज में हो रही है इस पर लोगो का ध्यान आकर्शित करना पटवर्धन जी का मुख्य उदेश्य रहा है। इस शोध पत्र में समाज के व्यापक एवं कलात्मक पछ को दृश्य कला की गुणात्मक विश्लेषण और शहरीय वास्तुशिल्प की कला प्रथाओं के परिवर्तन पर केंद्रित है। इनके कैनवस पर घनी आबादी एवं शहरी जीवन के केंद्रों को दर्शाते गया हैं, जो सामान्य श्रमिकों पर केंद्रित होते हैं। जब वे शहर की व्यस्त सड़कों या उपनगरीय निर्माण स्थलों पर काम करते हैं, तो उनके मानवीय रूप गरिमा की सहज भावना से भर जाते हैं। आश्चर्यजनक रूप से उनकी व्यापक कलात्मक पृष्ठभूमि को देखते हुए, यह कला व्यक्तिगत से सार्वभौमिक की ओर बढ़ती है।

पवन यादव

मुख्य बिन्दु

मुंबई कला, पेंटिंग, सामाजिक संघर्ष, सुधीर पटवर्धन, शहरी जीवन, माइग्रेंट वर्कर, महानगरीय कला, समकालीन कलाकार, कन्स्ट्रक्शन साइट।

शोध पत्र के उद्देश्य

इस शोध पत्र का यह उद्देश्य है कि शहरी जीवन का प्रतिनिधित्व करने में सुधीर पटवर्धन की कलात्मक तकनीकों और शैलीगत विकल्पों पर गहराई से विचार करना है। इनके शहरी परिदृश्यों में आवर्ती विषयों और रूपांकनों की पहचान करना और उनका पता लगाना है। इनमें शहरी क्षय, सामाजिक–आर्थिक असमानताएं, सांस्कृतिक विविधता और शहरी फैलाव के बीच मानवीय स्थिति का प्रतिनिधित्व शामिल हो सकता है। इनकी कला अक्सर सामाजिक टिप्पणी के रूप में कार्य करती है, जो शहरवासियों की चुनौतियों और जीत को दर्शाती है। एक शोध पत्र का उद्देश्य उनके चित्रों में अंतर्निहित संदेशों का विश्लेषण करना, प्रासंगिक सामाजिक मुद्दों और शहरी आबादी द्वारा सामना की जाने वाली वास्तविकताओं पर प्रकाश डालना है। शहरी अध्ययन के व्यापक संदर्भ में पटवर्धन की कलाकृति को स्थापित करके, शोध पत्र शहरीकरण, शहर नियोजन और सांस्कृतिक पहचान पर अकादमिक प्रवचन में योगदान देना चाहते है।

शोध पत्र का महत्व

शहरीय जीवन के चित्रण पर सुधीर पटवर्धन का शोध भारत में समकालीन शहरी संस्कृति के मूल्यवान दस्तावेज़ के रूप में कार्य करता है। यह शहरी परिवेश के दृश्य प्रतिनिधित्व को संरक्षित और संग्रहित करता है, मुंबई जैसे शहरों के सामाजिक–सांस्कृतिक ताने–बाने में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। पटवर्धन की कलाकृति के आलोचनात्मक विश्लेषण के माध्यम से, शोध पत्र समकालीन भारतीय कला के क्षेत्र में उनके योगदान की गहरी सराहना और समझ की सुविधा प्रदान करता है। यह कला के प्रति उत्साही, विद्वानों और आलोचकों के बीच संवाद को प्रोत्साहित करता है, कला, समाज और शहरी जीवन के अंतर्संबंधों पर सूक्ष्म चर्चा को बढ़ावा देता है। जो शहरी परिदृश्यों में अंतर्निहित सामाजिक–राजनीतिक आयामों को उजागर करके, शोध पत्र शहरी नीति निर्माताओं और योजनाकारों को शहर के निवासियों की वास्तविकताओं के बारे में सूचित कर सकता है। यह शोध पत्र कला इतिहास, समाजशास्त्र और शहरीय अध्ययन के बीच अंतर को पाटता है और अनुसंधान सहयोग को प्रोत्साहित करता है। यह कलात्मक अभिव्यक्ति की बहुमुखी प्रकृति और शहरीय संदर्भों में जटिल सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने में अपनी प्रासंगिकता को प्रदर्शित करता है।

शोध पत्र का साहित्य अवलोकन

सुधीर पटवर्धन भारतीय कला के एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली व्यक्ति हैं, जो अपने शहरी जीवनशैली और सामाजिक दर्शन को प्रकट करने के लिए प्रसिद्ध हैं। इस लघु लेख में, हम पटवर्धन की कला उसकी संवेदनशील वस्त्रुता और रोचक रंग–बिरंगे पेंच की विशेषता से चिन्हित है। उनके चित्रों में शहरी जीवन की परिकल्पना की गई है, जो अपारता, शोषित समुदायों की संघर्षों, और सामाजिक संबंधों की गहराई को छूते हैं। पटवर्धन की कला की महत्ता उसकी रोचकता, गहराई और समाजशास्त्रीय पहलू के बजाय उसके द्वारा उठाए गए प्रश्नों में है। हमें उनकी कला का गहराई से अध्ययन करने के लिए पहले हमे उसके कार्य प्रणाली एवं शैली को समझना आवश्यक हो जाता हैं जिस के लिये साहित्य अवलोकन द्वारा प्रस्तुत शोध को पूर्ण किया गया उनमें "कंटेंपरेरी इंडियन आर्ट इमेजिन लोकल्स" शुभलक्ष्मी शुक्ला, "सुधीर पटवर्धनः वॉकिंग

थ्रू सोल सिटी" नैन्सी अदजानिया, "समकालीन कला" पत्रिका, "कला भारती" भाग दो, पियूष दहिया और निम्न गैलरियों के कैटलॉग आर्टिक आदि का अध्ययन किया गया है। जिनके नाम सन्दर्भ सूची के अंतर्गत दिए गये हैं।

प्रस्तावना

भारत के आधुनिक कलाकार सुधीर पटवर्धन की कला में शहरीय जीवन के वामपन्थी विचारधारा दिखाई देता हैं जिनकी कला में शहरीय जीवन व्यतीत करने वाले साधारण लोग हैं। इन साधारण लोगों को आधुनिक कला के मंच पर लाकर खड़ा कर देना सुधीर पटवर्धन की एक बड़ी उपलब्धि है। इनका "जन्म 1949 में पुणे में हुआ था। 1973 में आई फ़ोर्सेस मेडिकल कॉलेज से वैद्यकीय स्नातक की शिक्षा प्राप्त किये, इनका कला में रुझान पहले से ही रहा लेकिन इन्होने कला की शिक्षा किसी भी शिक्षा संस्थान से नहीं लिए है। कला के क्षेत्र में इनकी पहली एकल प्रदर्शनी 1979 में हुआ।"[1] तब से भारत और विदेशों में अनेक प्रदर्शनियाँ किये। इन्हे शहरीय जीवन के समाजाभिमुख कलाकार के रूप में पहचान मिली। उन्होंने एक दफा कहा था कि "मेरा कलाकार होने का औचित्य इसी में है कि मैं साधारण लोगों का कलाकार हूँ। हो सकता है यह कहने में ऐसा लगे कि मैं अपने–आपको अत्यधिक सदाचारी बना रहा हूँ परन्तु कला के ऐसे लक्ष्य, जो आस–पास के साधारण लोगों के जीवन और जरूरतों से सरोकार नहीं रखते, मुझे नहीं सुहाते।"[2] इससे यह कहना उचित नहीं होगा कि सुधीर पटवर्धन से पहले भारतीय चित्रकला के विषय–वस्तु में शहरीय जीवन ब्यतित करने वाले सामान्य लोग, खासतौर से निचले वर्ग के लोगों के लिए, कोई जगह नहीं थी, कम्पनी स्कूल से ही शहरीय जीवन के विषयों को लेकर चित्रकारों ने अपने काफी कार्यो में भारत के साधारण लोगो को दर्शया है।

आजादी के बाद भारत में बहुत से कलाग्रुपों का स्थापना हुआ। जिनमे कोलकता ग्रुप, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, दिल्ली शिल्पीचक्र, ग्रुप 1890, आदि के कलाग्रुपों में जुड़े कुछ कलाकारों ने आजाद भारत की नई कला में शहरीय जीवन ब्यतित करने वाले आम आदमी के जीवन को दर्शाया है। इसका मुख्य कारण था कि इन कलाकारों ने नगरीय जीवन में बढ़ते औद्योगिकीय विकाश कारखाने में कार्यरत मजदूरों, शहर की जीवन से बहुत प्रभावित थे। जिसमे सुधीर पटवर्धन की कला का महत्व समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम उनकी वामपन्थी प्रतिबद्धता एवं विचारधारा में शहरीय जीवन व्यतीत करने वाले लोगो का खास ध्यान रखते हुये दर्शया गया है।

शहरीय जीवन

मुम्बई शब्द से ही मानव जहन में चकाचौद भरी शहर का ख्याल आ जाता है। इन्ही शहरों में रहने वाले निम्न वर्ग के लोगो को लेकर कला का निर्माण करने वाले कलाकर सुधीर पटवर्धन के कार्यो पर आधारित एक "'साचा' नाम का वृत्तचित्र यानी डॉक्यूमेण्ट्री फिल्म बनायी गई।"[3] इसमें सुधीर पटवर्धन को मुम्बई से रिश्ते को लेकर दर्शया गया है, इस फिल्म में वे बताते है, कि पुणे से मुम्बई 1973 में आये और यहाँ के जीवन शैली को समझाने के लिए बंबई में लगातार घूमते रहते थे एवं शहर के निवासियों और गलियों से परिचित हुए। उन्होंने उन विरोधाभासी भावनाओं का अनुभव किया जिनका सामना सभी शहरीय निवासी करते हैं। अपने परिवेश से अलगाव की भावना, लेकिन साथ ही भरी भीड़ के साथ एकजुटता की भावना भी था। इन्हीं कारणों से इन श्रमिकों के चित्रों को कला में चित्रित करने वाले पटवर्धनजी की व्यक्तिगत विशेषताओं का उल्लेख करना आवश्यक है। उनकी रचनात्मक प्रक्रिया में भौतिक अनुभव बार–बार आते रहते हैं। "उन्होंने कहा कि

जब वे 'वर्कर' चित्रमाला में कार्य कर रहे थे तो उन्होंने स्वयं अपने शरीर में श्रमिकों के दर्द और पीड़ा को महसूस किया था।"[4] पटवर्धनजी उस दर्द और पीड़ा को समझना और अनुभव करना चाहते थे जैसे कलाकार सेजयान और अन्य कलाकारों को सृजन–प्रक्रिया करते समय गुजरना पड़ता था। जिनमे एकल–व्यक्ति–चित्र हैं, जैसे 'स्क्रीमिंग वुमन' (रोती–चिल्लाती स्त्री), 'वर्कर' (श्रमिक), 'कन्स्ट्रक्शन साइट', 'मैन वियरिंग टू शर्ट्स', 'ईरानी रेस्तराँ', 'ऐक्सिडेण्ट ऑन मे डे', 'ट्रेन' और 'स्ट्रीट प्ले' 'नल्लाह' ,'पोखरन', ट्रे आदि है।[5] इस तरह से वह कला चित्र ऐक्सप्रैशनिस्ट यानी अभिव्यंजनावादी थे। यदि इस दृष्टि से हम सुधीर पटवर्धन की इस काल की कलाकृतियों को देखें तो वे असलियत से प्रेरित जरूर लगती हैं लेकिन उन्हें यथार्थवादी नहीं कहा जा सकता।

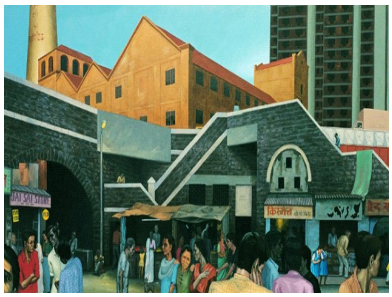

सुधीर पटवर्धन, लोअर परेल (2001)

नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट (एन.जी.एम.ए.), मुंबई में सुधीर पटवर्धन द्वारा 2020 की आखिरी प्रमुख प्रदर्शनियों में से एक, वॉकिंग थ्रू सोल सिटी एन.जी.एम.ए. में प्रदर्शित, नैन्सी अदजानिया द्वारा क्यूरेट की गई। अपने क्यूरेटोरियल शीर्षक, वॉकिंग सोल सिटी में, नैन्सी अदजानिया लिखती हैं कि उनकी कला "समकालीन भारत में महानगरीय जीवन के संकट और शहरीकरण के आघात की सबसे सम्मोहक सचित्र अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करती है।"[6] जबकि उनके जीवन के कार्यों को मुंबई की आशाओं, महत्वाकांक्षाओं और संघर्शों के एक कालातीत संकलन के रूप में देखा जा सकता है, वे शहर के हाल के इतिहास के कुछ सबसे उथल–पुथल भरे क्षणों को भी दर्ज करते हैं। 1992 के दंगों से लेकर 2020 के आव्रजन संकट तक, पटवर्धन ने राजनीतिक संघर्श, आर्थिक असमानता और सामाजिक अन्याय पर सहानुभूतिपूर्ण नज़र से ध्यान आकर्शित करने के लिए अथक प्रयास किया है। उनकी कृतियों में से कुछ प्रसिद्ध पेंटिंग, जैसे कि कंजुर (2004), द क्लियरिंग (2007) और द इमर्जेंट (2012), यादगार रूप से दर्शाती हैं कि मुंबई शहरी नवीनीकरण के शिखर पर है। इमर्जेंट, विशेष रूप से, शहर में परिवर्तन का प्रतीक है। इसमें केबिनों से घिरी एक चमचमाती शीशे वाली इमारत दिखाई देती है, जो पुराने और नए, अमीरों और गरीबों का एक आदर्श मिश्रण प्रदर्शित करती है।

कभी पटवर्धन की पसंदीदा जगह रही मुंबई की पूर्ववर्ती सपनों की नगरी का ज्यादातर हिस्सा तेजी से लुप्त हो रहा है। वह स्वीकार करते हैं, ''मैं वर्षों से इस बदलाव को अपनाने की कोशिश कर रहा हूं। अनिवार्य रूप से, एक कलाकार वर्तमान पर प्रतिक्रिया कर रहा है। अतीत चला गया है और आप इसे पकड़कर नहीं रह सकते। क्योंकि मैं 1970 के दशक में रहा हूँ, 80 और 90 का दशक, मेरी और मेरी पीढ़ी के कई लोगों

के पास उस समय की यादें हैं, जिसने मुंबई के इतिहास में एक युग को चिह्नित किया। मैं कह सकता हूं कि हमने बहुत कुछ खो दिया है जिसने शहर को महान बनाए थे। लेकिन एक समय था जब मुंबई अधिक स्वतंत्र और तरल शहर था। सभी का स्वागत था। होटलों में एक सामुदायिक संस्कृति थी। आप काली पीली (टैक्सी) में सवार हो सकते हैं) और मरीन ड्राइव पार करते समय ताजी हवा में सांस लेने के लिए खिड़की से नीचे झुकें। आज, आप उबर में सभी खिड़कियां खुली रखकर यात्रा करते हैं। आप सामाजिक वास्तविकता से बहुत दूर हैं। चाहे आप बाहर देखने का निर्णय लें या नहीं, एक अलग शहर आपकी ओर देख रहा है। इससे पहले कि आप उसे एक निराशाजनक शहर का लेबल दें, वह एक अस्वीकरण जोड़ता है।"[7] लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि 1970 और 1980 का दशक एक आदर्श अवधि थी। इनके लिए, कम से कम, इसे छोड़ना कठिन एवं अर्थहीन है।

चित्रों में शहरीय जीवन

पटवर्धन जी की प्रमुख चित्र कलात्मक जाँच–परख के उसी सिलसिले का विस्तार हैं जिसे वे दशकों से संचालित कर रहे हैं। वह अपनी खास अद्वितीय शैली में शहरीय जीवन को पेश करते हैं, उनके परिप्रेक्ष्य हमें गफ़लत में डाल देते हैं, क्षितिज रेखाएँ, आकाश का स्पर्श कर रही हैं जो जलाकारों में विलीन होता हुआ है, छतें फ्लाई ओवरों में घुल रही हैं, और सड़कें एक–दूसरे को काटती हुई दिशाओं में जा रही हैं, जैसे हम एक ही दृश्य को पाँच उच्चतर बिन्दुओं से देख रहे हों और शहर को निहारने की एक ईश्वरीय दृष्टि भी हमें उपलब्ध हो गयी हो। आगे चलकर यह थोड़ा उचाट करता है जब हम समझते हैं कि बिल्कुल सटीक तौर पर विन्यस्त ये असम्बद्ध टुकड़े एक ही जगह से देखे गये दृश्य का हिस्सा दरअसल नहीं हैं और यह हमारी पुतलियों को धोखा दे रहे हैं। शहर की भिन्न–भिन्न जगहों के फ़ोटोग्राफ़िक सन्दर्भों के संचय की यह शामिल जुझारू प्रक्रिया कैनवास पर छवियों के रूपायन से पहले घटित होती है। एक बार पेंटिंग्स के शुरू हो जाने के बाद यह सारे सन्दर्भ एक–दूसरे के साथ एक तरह का प्रतिसम्बन्ध सम्भव करते हैं। अक्सर शहर की कुछ खास जगहें कई क़िलोमीटर दूर स्थित मुहल्लों में घुलती और उभरती हुई आती हैं। जैसे जीवन–यापन के संघर्श और साझा आकांक्षाओं के सहमेल ने नागरिकों के लिए बीच की दूरियों को निरस्त कर दिया हो–एक साझा ब्रह्माण्ड का विचार प्रस्तावित करते है।

शीर्षक 'स्ट्रीट प्ले': शहरीय कला की एक अद्भुत शक्ति है। 1982 में बंबई को हिला देने वाली विशाल कपड़ा मिल हड़ताल के मद्देनजर बनाया गया यह चित्र बंबई महानगर को विभिन्न हिस्सों से एक साथ सिले हुए पैनलों के अनुक्रम के रूप में प्रस्तुत करता है। ये पैनल हमें शहर के अशांत इतिहास के बारे में बताते हैं, एक तरफ में उत्साहित श्रमिकों के एक समूह के साथ एक कपड़ा मिल दिखाई दे रही है, दूसरे में पृष्ठभूमि के रूप में डी एन रोड आर्केड के साथ एक वामपंथी थिएटर समूह के सड़क प्रदर्शन को दिखाया गया है। कलाकार एक खंभे के पीछे से प्रदर्शन देखता है। एक अभिनेता, क्रूस पर चढ़ाए गए ईसा मसीह की तरह अपने हाथ फैलाए घुटनों के बल बैठा हुआ है और कांच के स्टोरफ्रंट में दृश्य और उसके प्रतिबिंब के बीच बंटा हुआ है।[8] यह चित्र शहरीय जीवन के उत्कृष्ट कलाकृतियों में एक है।

शीर्षक 'डेथ ऑन द स्ट्रीट': यह तस्वीर तनावपूर्ण क्षण पैदा करती है. एक आदमी फुटपाथ पर लेटा हुआ है और भीड़ उसकी मदद करने और देखने के लिए उसके चारों ओर इकट्ठा हो गई है। यह

पेंटिंग जुड़ाव और अलगाव की भावना को समान रूप से प्रस्तुत करती है। मुंबई और ठाणे की सड़कों का विवरण इतना आवश्यक है कि कोई भी ऐसी घटनाओं के सामने उन्हें किसी भी सामान्य जगह के रूप में चित्रित कर सकता है। मुंबई के दक्षिण में एक क्षेत्र में सर्वेक्षण के अनुसार, दैनिक जनसंख्या 4.5 मिलियन है। जब बहुत से लोग सड़क पर रहते हैं, तो हजारों दुर्घटनाओं की चौंकाने वाली संख्या कोई अपवाद नहीं है। मुंबई एक ऐसा शहर है जो नवीनता के लिए खुद को नष्ट कर रहा है, एक ऐसा शहर जो एक नया क्षितिज बना रहा है और दुनिया के महान शहरों में शामिल होने से इनकार कर रहा है। खंडित बुनियादी ढांचे और खराब अनौपचारिक आवास स्थितियों का उल्लेख नहीं किया गया है, जो शहर की आधी आबादी को बुनियादी सुविधाओं से भी वंचित करता है। सुधीर की कल्पनाशीलता ऐसे परिवर्तनों को संवेदनशील ढंग से चित्रित करती है। उनका अनोखा रंग संयोजन कंक्रीट और गारे से बने शहरी वातावरण को दर्शाता है, जो सूरज की गर्मी को आसपास की हवा में प्रतिबिंबित करता है। इसका अनोखा रंग संयोजन कंक्रीट और गारे से बने शहरी वातावरण का प्रतिनिधित्व करता है जो सूरज की गर्मी को आसपास की हवा में प्रतिबिंबित करता है।[9]

शीर्षक– डेथ ऑन द स्ट्रीट, माध्यम– ऐक्रेलिक और कैनवास (2006)

शीर्षक 'द क्लीयरिंग': यह रंगीन चित्रों में से एक है। तस्वीर के केंद्र में एक विशाल शून्य है, जो एक सुंदर इमारत बनाने के लिए झुग्गियों के विनाश के परिणामस्वरूप बनाया गया है। खुली जमीन पर सफेद चाक के निशान देखे जा सकते हैं, जो एक नई ऊंची इमारत की सीढ़ियों को चिह्नित करते हैं। पीछे हटकर आसपास की झुग्गियों को देखने पर ऐसा लगता है मानो हम क्षितिज को देख रहे हों। झुग्गियों की छतें शाम के गुलाबी आसमान से टकराती हैं। यह ऐसा था मानो नवजात स्वप्न ने हार मान ली हो, और आशा के सपनों ने एक निराशाजनक वास्तविकता से समझौता कर लिया हो। एक खाली और परित्यक्त इमारत पानी में चमकती है। शहर की बालकनियों पर रंग–बिरंगे कपड़े सुखाना एक आम दृश्य है। इसने ऊंची इमारत के पिछे, पानी में प्रतिबिंबित वास्तुकला और संभावित इमारत की खोखली रूपरेखा के बीच एक मनमाना संबंध बनाया। पिछवाड़े के दाहिनी ओर अनियमित ऊंचाई पर छोटे–छोटे मकानों और कुछ उद्योगों के बोर्ड लगे हुए हैं, जिन्हें जल्द ही शक्तिशाली भू–माफिया द्वारा ध्वस्त कर दिया जाएगा। लेकिन यह जानकर कोई भी चौंक जाएगा कि इस हल्के गुलाबी आकाश के पीछे झीलों और पहाड़ियों की एक और जटिल दुनिया छिपी है।

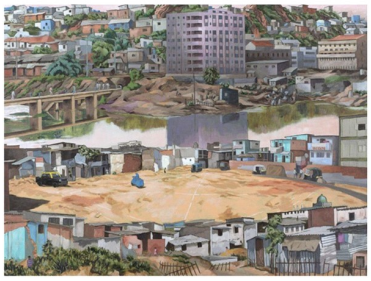

शीर्षक– 'द क्लीयरिंग, माध्यम– ऐक्रेलिक और कैनवास (2007)

शीर्षक 'बाइलानेस सागा': पेंटिंग का ऊपरी हिस्सा थाणे की राबोड़ी नामक स्थान से है और निचला हिस्सा बॉम्बे में गोवान्दी से है और पटवारहंस की समृद्ध कल्पना दोनों स्थानों को जोड़ती है। इस संरचना को ग्राफ़िक रूप से दर्शाया गया है और इसमें कम से कम चार अलग–अलग स्थितियाँ शामिल हैं। इन दुनियाओं को मिलाने और अलग करने के लिए सूर्य के प्रकाश और वास्तुकला का उपयोग उपकरण के रूप में किया गया था। अपनी रोजमर्रा की जिंदगी जीने वाले लोग साधारण गलियों में आते–जाते रहते हैं। छत आकाश की ओर खुलने के बजाय दूसरी गली की ओर खुलती है, जहाँ एक आदमी मृत पड़ा है और तीन लोग उसकी मदद के लिए उसके पैरों के पास खड़े हैं। या क्या ये तीनों वास्तव में भागीदार हैं और जिसने झूठ बोला वह पीड़ित है? क्या यह सामूहिक आग की शुरुआत हो सकती है, और क्या बुर्के में महिलाएं किसी सामूहिक विद्रोह की शुरुआत कर रही हैं? पटवर्धन जी इस मामले जानकारी में कोई आसान मदत के पेशकस नहीं करते। इस पाठ की शैली ही पेंटिंग की गति के साथ–साथ उसकी सामग्री की नाटकीय क्षमता को भी निर्धारित करती है।[10]

शीर्षक – बाइलानेस सागा, माध्यम– ऐक्रेलिक और कैनवास (2007)

शीर्षक 'अनटाइटल्ड– I': इस शीर्षक में एक झुग्गी बस्ती को दिखाते है जहां लोग रहते हैं और छोटे व्यवसाय चलाते हैं, जो कुछ हद तक एशिया की सबसे बड़ी झुग्गी धारावी जैसा दिखता है। चित्र में दो लोडेड ट्रक औद्योगिक गतिविधि को दर्शाते हैं। मुंबई जैसे शहर में झुग्गियां भी शहर के व्यावसायिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उदाहरण के लिए, धारावी का अपना कपड़ा और हथकरघा जैसे कुटीर उद्योगों के माध्यम से निर्यात में सालाना लाखों डॉलर कमाता है। लेकिन छते फिर से नीले आकाश की ओर नहीं, बल्कि काले सागर की ओर खुलती है। प्रत्येक नागरिक के लक्ष्यों सहित, शहर के सबसे गहरे सपनों की पांडुलिपियों के साथ, आकाश थोड़ा और आगे बढ़ गया।[11]

निष्कर्ष

सुधिर पटवर्धन की शहर–आधारित कलाकृति मात्र प्रतिनिधित्व की सीमाओं को पार करती है, जो हमें शहरीय जीवन और इसके बहुमुखी आयामों की गहन खोज की पेशकश करती है। अपनी विशिष्ट शैली, प्रतीकात्मकता और भावनात्मक अनुभव के माध्यम से, वह हमें अपने भीतर शहरीय आत्मा को उजागर करते हुए, आत्मनिरीक्षण और खोज की यात्रा पर जाने के लिए आमंत्रित करते है। जैसे ही हम उनकी रचनाओं पर विचार करते हैं, हमें शहरी अस्तित्व की अंतर्निहित सुंदरता, जटिलता और सतह के नीचे छिपे हुए सत्य को उजागर करने की कला की स्थायी शक्ति की याद आती है। शहर के लगातार बदलते परिदृश्य में, पटवर्धन की कलाकृति मानवीय भावना और संबंध, अर्थ और अपनेपन की उसकी स्थायी खोज के लिए एक कलातीत प्रमाण के रूप में खड़ी है। इसी अंधकार को चमकाने के लिए शहरीय जीवन का समावेश करना, सुधिर पटवर्धन जैसे कलाकारों के लिए एक अनोखा और महत्वपूर्ण स्थान रहा है। सुधिर पटवर्धन के अनुसार, हम केवल शहर की भावना को नहीं देखते हैं, बल्कि हम उस शहर की आत्मा, संस्कृति और उन सभी लोगों की शैली एवं सामाजिक विविधता को भी अनुभव करते हैं।

पैटवर्धन अपने काम में शहरीय के परिवर्तन को सीमित नहीं करते है। उनके चित्रों में केवल उस शहर की महानगरीय जानकारी शामिल नहीं है, बल्कि उनमें आस–पास के गाँवों, उपनगरों और उनके लोगों को भी शामिल किया गया है। उनके संग्रह में शहर एक संगीत बन गया है, जिसके हर सुर में अपनी आत्मीयता और ध्वनि के साथ विविधता शामिल है। उनके चित्रों में न केवल शहरी जीवन की सच्चाई को उजागर किया गया है, बल्कि उन्होंने अपने आयामों को भी अपने काम के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उनके चित्र सशक्त रूप से अंकित है, इनका मानना है कि शहर न केवल ढाल और इमरातों की जगह है, बल्कि यह एक विविधता, विवाद और अनदेखी भूमि भी है। इनके चित्रों में शहरी जीवन के आनंद और सामग्री के साथ हमारे संबंधों को स्पष्ट करने की क्षमता है। उनकी संरचना के माध्यम से, हम केवल शहर की भौतिकता को नहीं देखते हैं, बल्कि हम उनके मनोवैज्ञानिक और वैज्ञानिक आयामों को भी देखते हैं। उनके चित्रों में हम समाज, संगीत, कला और जीवन के विभिन्न तत्वों का समूह देखते हैं, जो शहर को एक संवाद और समृद्धि की भूमि बनाते हैं। इस प्रकार, सुधिर पटवर्धन की संरचना में शहरीय जीवन का समावेश एक अद्वितीय और गहराई से किया गया है। उनकी कला में, हम शहर के जीवन की असीमित विविधताएं, आत्मा की मधुरता, और उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का अनुभव शामिल है। और इस प्रकार, उनकी रचनाओं के माध्यम से हमें अपने शहरी विरासतों को नए और महत्वपूर्ण दृष्टिकोण से देखने का अवसर मिलता है।

सन्दर्भ

1. ठकार, निशिकान्त., दईया, पियूष. (2010). शहर की प्रशस्ति सुधीन पटवर्धन के हाल के रेखाचित्र और पेंटिंग. कला भारती (खण्ड़ दो). ललितकला प्रकाशन. प्रथम संस्करण. पृष्ठ **108–137.**
2. सिंह, के. विक्रम. (2008–2009). सुधीर पटवर्धन का श्रमिक जीवन. समकालीन कला. अंक 36–37. ललितकला प्रकाशन. प्रथम संस्करण. पृष्ठ **25–29.**
3. सिंह, के. विक्रम. (2008–2009). सुधीर पटवर्धन का श्रमिक जीवन. समकालीन कला. अंक 36–37. पृष्ठ **27.**

4. कुलकर्णी, पद्माकर., दईया, पियूष. (2010). सुधीर पटवर्धनः मनुष्यत्व के बढ़ते दायरे. कला भारती (खण्ड दो). पृष्ठ **146.**
5. सिंह, के. विक्रम. (2008–2009). सुधीर पटवर्धन का श्रमिक जीवन. समकालीन कला. अंक 36–37. पृष्ठ **28–28.**
6. Ayaz, Shaikh. (2022). Sudhir Patwardhan: The People's Painter. An anthology maps Sudhir Patwardhan's interpretation of Mumbai's struggles, hopes and aspirations. Open magazine, 24th Jun. https://openthemagazine.com/artculture/sudhir-patwardhan-the-peoples-painter/ 12th Feb.2024.
7. Ayaz, Shaikh. (2022). Sudhir Patwardhan: The People's Painter. An anthology maps Sudhir Patwardhan's interpretation of Mumbai 's struggles, hopes and aspirations. Open magazine, 24th Jun. https://openthemagazine.com/artculture/sudhir-patwardhan-the-peoples-painter/ 12th Feb.2024
8. Adajania, Nancy. (2020). The Art of Resistance: Sudhir Patwardhan's "Street Play" reflects the diversity of defiant voices. Scroll In, 01th Jan 2020. https://scroll.in/article/948273/ the-art-of-resistance-sudhir-patwardhans-street-play-reflects-the-diversity-of-defiant-voices 20th Feb 2024.
9. कल्लाट, जितिश., दईया, पियूष. (2010). शहर की प्रशस्ति सुधीर पटवर्धन के हाल के रेखाचित्र और पेंटिंग. कला–भारती (खण्ड दो). पृष्ट **169.**
10. Fernando, Benita. (2019). Mumbai artist Sudhir Patwardhan talks about how the city is a place of constant transformations. 22 December. https://indianexpress.com/article/express-sunday-eye/mumbai-artist-sudhir-patwardhan-talks-about-how-the-city-is-a-place-of-constant-transformations-6176703/
11. कल्लाट, जितिश., दईया, पियूष. (2010). शहर की प्रशस्ति सुधीर पटवर्धन के हाल के रेखाचित्र और पेंटिंग. कला–भारती (खण्ड दो). ललितकला प्रकाशन. प्रथम संस्करण. पृष्ट **167–172.**